# प्रीलिम्स फैक्ट्स : 21 मई, 2018

**निपा वायरस (Nipah Virus)**

केरल के कोझीकोड ज़िले में रहस्यमय बीमारी से मरने वालों की संख्या आठ हो गई है। केरल सरकार द्वारा इस क्षेत्र में कार्यवाही करने के लिये एनसीडीसी (National Centre for Disease Control-NCDC) को तैनात किया गया है। कोझीकोड में होने वाली मौतों के लिये ज़िम्मेदार कारक के रूप में 'निपा वायरस' की पुष्टि की गई है। पुणे विरोलॉजी इंस्टीट्यूट द्वारा निपा वायरस की पुष्टि की गई है।

- इंडियन मेडिकल एसोसिएशन द्वारा इस मामले में अधिक सटीक एवं प्रभावी जाँच-पड़ताल के लिये एक समिति का गठन किया गया है।

**निपा वायरस**

- यह वायरस इंसानों के साथ-साथ जानवरों को भी प्रभावित करता है। यह वायरस फ्रूट बैट्स के माध्यम से इंसानों और जानवरों पर आक्रमण करता है।
- वर्ष 1998 में पहली बार मलेशिया के कांपुंग सुंगई निपा में इस वायरस के मामले नज़र आए थे। वर्ष 2004 में बांग्लादेश में भी इसके मामले सामने आए थे।
- एक जानकारी के अनुसार, अक्सर देखने को मिलता है कि खिजूर की खेती करने वाले लोग फ्रूट बैट्स की चपेट में आ जाते हैं। इसके बाद एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में इस वायरस का प्रसार होता है।
- इस वायरस की चपेट में आने के बाद व्यक्ति को साँस लेने में परेशानी होती है, जिसके बाद वह इंसेफ्लाइटिस से ग्रसित हो जाता है।

**लैफोरिन और हंटिंगटन का उपचार**

आइआइटी कानपुर के बायोलॉजिकल साइंसेज एंड बायो इंजीनियरिंग (बीएसबीई) विभाग ने लैफोरिन (laforin) और हंटिंगटन बीमारी के उपचार की राह में एक नई उपलब्धि हासिल की है। विशेषज्ञों द्वारा प्रदत्त जानकारी के अनुसार, ग्लाईकोजेन (शरीर रचना में शक्कर उत्पन्न करने वाला पदार्थ) एक बीमारी के लिये अभिशाप और दूसरे के लिये वरदान साबित होता है। शोधकर्त्ताओं द्वारा लैफोरिन और हंटिंगटन का उपचार ढूंढने का दावा किया गया है।

**लैफोरिन**

- यह मस्तिष्क से संबंधित बीमारी होती है। इसमें बहुत तेज़ एवं बार-बार दौरे पड़ते हैं साथ ही याद्दाश्त भी कमज़ोर होने लगती है।
- इस रोग का असर 10 से 12 साल की उम्र में शुरू होता है, इसके बाद रोगी की मानसिक क्षमता क्षीण होती जाती है। अधिकतर मामलों में इस रोग से ग्रस्त होने के 10 साल के भीतर मरीज़ की मृत्यु हो जाती है।
- 'लैफोरिन' नामक बीमारी होने का मुख्य कारण असामान्य रूप से एकत्र ग्लाईकोजेन है। यह रोगी के दिमाग और शरीर के अन्य हिस्सों में पाया जाता है।
- लैफोरिनबॉडीज़ का एकत्र होना न्यूरॉन्स (तंत्रकोशिका) और अन्य कोशिकाओं के लिये बेहद हानिकारक होता है क्योंकि न्यूरॉन्स मस्तिष्क से पूरे शरीर में संदेश भेजने और शारीरिक क्रियाओं को नियंत्रित करने का काम करते हैं।
- अधिकतर मामलों में यह देखा गया है कि यह रोग EPM2A या फिर NHLRC1 जीन में से किसी एक की कोडिंग में गड़बड़ी होने से होता है। यह जीन न्यूरॉन्स को जीवित रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान करता है।
- इन दोनों जीन से बनने वाले प्रोटीन लैफोरिन और मैलिन ग्लाईकोजेन के निर्माण को नियंत्रित करते हैं।
- ग्लाईकोजेन, कोशिकाओं में संग्रहित ऊर्जा का महत्त्वपूर्ण स्रोत होता है। ऐसे में जब कोशिकाओं को ऊर्जा की आवश्यकता होती है, तो वे ग्लाईकोजेन को तोड़कर उर्जा प्राप्त करती हैं।

**हंटिंगटन**

- यह भी एक न्यूरो जनित रोग है। इसमें भी न्यूरॉन्स की मृत्यु हो जाती है। रोगी की मानसिक शक्ति कमज़ोर हो जाती है और वह चलने-फिरने में असमर्थ हो जाता है।

- इस रोग में हंटगिटन प्रोटीन एकत्रति होने लगता है।

**हमिालयी जड़ी बूटी के लयि हानकिारक है अनयिमति फसल**

जल्द ही भारत के कई हस्सिों से हमिालय की एक सामान्य जड़ी-बूटी हमिालयन ट्रलियिम (Himalayan trillium) के वलिुप्त होने की संभावना है। इस प्रजाति की वलिुप्तकि का कारण वनियिमति अत्यधकि उपज को बताया गया है।

- यह शोध जर्नल ऑफ एथनोफार्माकोलॉजी (Journal of Ethnopharmacology) में प्रकाशति हुआ।
- हमिालयी ट्रलियिम भारत, भूटान, नेपाल और चीन में पाया जाता है। यह स्टेरॉयडल सैपोननि (steroidal saponins) का एक प्राकृतकि स्रोत है जो स्टेरॉयड दवाओं का महत्त्वपूर्ण घटक होता है। यह पौधा पारंपरकि चीनी दवाओं में लोकप्रयि है।
- पछिले एक दशक में इसकी बढ़ती हुई मांग ने इसके अवैध व्यापार बढ़ावा दयिा है। यही कारण है कविर्तमान में इसकी कीमत प्रतकिलिोग्राम लगभग 3000 से 5000 रुपए तक पहुँच गई है।
- आमतौर पर यह पौधा घने पेड़ के कवर के साथ नमी वाले पहाड़ी ढलानों में पाया जाता है। अप्रैल में बर्फ पघिलने के तुरंत बाद यह भूमगित कंदों से अंकुरति होने लगता है तथा सतिंबर में शीतकालीन ऋतु के आगमन के साथ इसकी प्रजनन दर नष्क्रियि होने लगती है।
- इस पौधे की सबसे वशिेष बात यह है कआिमतौर पर इसका एक पौधा (इसकी आयु 30 वर्ष या इससे अधकि होती है) एक वर्ष में केवल एक ही फूल वकिसति करता है। साथ ही कंदों के माध्यम से होने वाला वनस्पतप्रिजनन केवल पुराने पौधों में होता है।
- प्रजनन के ऐसे नम्नि स्तर और चराई जैसे कारकों के दबाव के साथ-साथ अनयिमति उपज ने कई क्षेत्रों में पौधे के स्थानीय वलिुप्तीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमकिा नभिाई है।
- अत: आवश्यक है कइिस वशिेष गुणवत्ता वाले पौधे का संरक्षण सुनश्चिति करने के लयि वन्यजीव संरक्षण अधनियिम (Wildlife Protection Act) के तहत इसे अनुसूचति प्रजातयिों के रूप में शामलि कयिा जाना चाहयि ताकइिसके वषिय में प्रभावी कदम उठाए जा सकें।

**यमुना नदी अग्रभाग (रविर फ्रंट) वकिास परयिोजना 'असति'**

इस परयिोजना का अनुमोदन एनजीटी द्वारा गठति समतिनि कयिा था। यह परयिोजना बाढ़ से प्रभावति होने वाली जमीन के प्रत्यावर्तन, पुनर्जीवन एवं नवीनीकरण से संबंधति है। इस परयिोजना का एक प्रमुख घटक नदी का अग्रभाग 'वॉक्स' लोगों को यमुना नदी के साथ एक संबंध वकिसति करने में सक्षम बनाएगा। इस परयिोजना को 'असति' का नाम (यमुना नदी का दूसरा नाम) दयिा गया है। इस परयिोजना का एक वशिेष फोकस राष्ट्रीय राजधानी में नदी की जैव ववििधिता को पुनर्जीवति करने पर है।

**प्रमुख बदिु**

- इस परयिोजना में नदी के जल की पारस्थ्तिकिी से संबंधति प्रजातयिों के साथ नदी के कनिारे लगभग तीन सौ मीटर चौड़े एक हरति बफर क्षेत्र के सृजन की परकिल्पना की गई है।
- इसके अतरिक्ति, परधिीय सड़कों के साथ 150 मीटर के एक चौड़े क्षेत्र का भी हरति मार्ग के रूप में सार्वजनकि सुवधिाओं, जनिमें पगडंडी तथा साइकलि ट्रैक शामलि होंगे, वकिास कयिा जाएगा।
- नदी के जल से प्रभावति होने वाली ज़मीन की पारस्थितकिी प्रणाली को पुनर्जीवति करने के लयि दलदली भूमकिा सृजन कयिा जाएगा जसिसे कबिाढ़ के पानी को भंडारति कयिा जा सके, साथ ही भू-जल पुनर्भरण में भी सुधार लाया जा सके। इसका परणिाम अंततोगत्वा नदी के बाढ़ से प्रभावति होने वाली ज़मीन में जैव ववििधिता के फलने-फूलने के रूप में सामने आएगा।
- नगर के शहरी ताने-बाने में नदी के समेकन के लयि पर्यावरणीय रूप से जागरत दृष्टकिोण का अनुसरण कयिा गया है। नदी की पारस्थितकिी प्रणाली के साथ मुक्त रूप से लोगों के परस्पर मलिने-जुलने के लयि एक लोकोन्मुखी जैव ववििधिता क्षेत्र का सृजन कयिा जाएगा।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prelims-fact-21-05-2018